SHRI NAREN GURUNG

Shri Naren Gurung is a renowned and outstanding person in the field of art and literature from Sikkim. He is celebrated as a bridge between Sikkim ancient traditions and modern cultural expression.

2. Born on 21 January, 1957, Shri Gurung received the Higher Secondary Education Certificate from West Bengal Education Board in the year 1974. Later he joined as a Primary Teacher in Dikling High School, presently under Pakyong District of Sikkim. Government of Sikkim transferred him into Song and Drama unit, in the year 1979 on considering his talent in the field of Art and Culture. Shri Gurung is the founder artist of the Song and Drama unit of Sikkim.

3. Shri Gurung with his vehement talent in the field of Art and Culture served the state govt, as singer, musician, choreographs and drama artist. Besides he has generously preserved the Nepali Folk literature and music. Shri Gurung with his extraordinary talent has revived/recollected the vanishing cultural heritage of his community.

4. Shri Gurung is a graded artist as he has performed radio AIR concert and recording with AIR Gangtok, AIR Shillong, AIR Agartala, AIR Imphal, AIR Guwahati, AIR Kurseong. He is associated to Sangeet Natak Akadamy, New Delhi (life time) and NEZCC, EZCC and Sikkim Akademi, Nepali Sahitya Parishad Sikkim and Sanskar Bharati Sikkim. Besides the above awards, he has been invited as a resource person and Jury Member for many events held within state and outside as well. Showcasing the cultural heritage of the state, he had performed various folk lore all over India and abroad such as North/South America, Africa etc.

5. Shri Gurung has done specialization on Research and Study in many subjects of Nepali folk songs and folk dances as well as parampara and folk tales (customary and folk tales) such as Maruni, Sorathi, Sangini, Ratauli, Ghasia, Rasia, Asaray, Damkey, Bethi, Balan, Khaichadi, Dolakhe, Kanyadan, Nawmati, Dhan naach, Shilok, Kabite, Chudka, Jhaurey, Gaine, Deosi-Bhailo, Bhaileni, Malshree, Thado Bhaka, Tamang Selo, Chandi, Ghato, Kaura, Gothaley geet, Tungna geet, Lok dohori etc. Shri Gurung has penned a couple of books viz; Lok Darpanbhitra Bhanjhyangka Bhakaharu 2017, Lokayan ma Banchaka Nepali lokgeet Sangeet 2021, Tirsana Geet-Sangeet ko- 2023.

6. Shri Gurung is the recipient of numerous awards and honours. He has been conferred Sikkim state Award - 2008 for folk Singer Composer and Lyrisist, Sangeet Natak Akadamy Award 2004 - New Delhi, Sikkim Sewa Samman - 2022 – by Govt, of Sikkim, Lok Sahityakar M.M. Gurung Smriti award- 2022 by Gaari Bas – Darjeeling.

श्री नरेन गुरूङ्ग

श्री नरेन गुरूङ्ग सिक्किम के कला और साहित्य के क्षेत्र में प्रसिद्ध और उत्कृष्ट व्यक्ति है। उन्हें सिक्किम की प्राचीन परंपराओं और आधुनिक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के बीच सेतु के रूप में जाना जाता है।

2. 21 जनवरी, 1957 को जन्मे, श्री गुरूङ्ग ने वर्ष 1974 में पश्चिम बंगाल शिक्षा बोर्ड से उच्चतर माध्यमिक शिक्षा प्रमाणपत्र प्राप्त किया। बाद में उन्होंने वर्तमान सिक्किम के पाकयोंग जिले के अंतर्गत आने वाले डिकलिंग हाई स्कूल में प्राथमिक शिक्षक के रूप में कार्यभार संभाला। कला और संस्कृति के क्षेत्र में उनकी प्रतिभा को देखते हुए सिक्किम सरकार ने वर्ष 1979 में उन्हें गीत और नाटक शाखा में स्थानांतरित कर दिया। श्री गुरुंग सिक्किम की गीत और नाटक शाखा के संस्थापक कलाकार हैं।

3. कला और संस्कृति के क्षेत्र में अपनी प्रखर प्रतिभा के साथ श्री गुरुंङ्ग ने गायक, संगीतकार, कोरियोग्राफर और नाटककार के रूप में राज्य सरकार की सेवा की। इसके अतिरिक्त, उन्होंने नेपाली लोक साहित्य और संगीत को भी उदारतापूर्वक संरक्षित किया है। श्री गुरुंङ्ग ने अपनी असाधारण प्रतिभा से अपने समुदाय की लुप्त होती सांस्कृतिक विरासत को पुनर्जीवित किया है।

4. श्री गुरूङ्ग मान्यता प्राप्त कलाकार हैं क्योंकि उन्होंने ऑल इंडिया रेडियो के साथ कई रेडियो संगीत कार्यक्रमों जैसे एआईआर गंगटोक, एआईआर शिलांग, एआईआर अगरतला, एआईआर इम्फाल, एआईआर गुवाहाटी, एआईआर कुर्सेओंग में प्रदर्शन किया है। वह संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली (जीवनकाल) और एनईजेडसीसी, ईजेडसीसी और सिक्किम अकादमी, नेपाली साहित्य परिषद सिक्किम और संस्कार भारती सिक्किम से जुड़े हुए हैं। उपर्युक्त पुरस्कारों के अतिरिक्त, उन्हें राज्य के भीतर और बाहर आयोजित कई कार्यक्रमों में विशेषज्ञ व्यक्ति और जूरी सदस्य के रूप में आमंत्रित किया जाता रहा है। राज्य की सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करते हुए, उन्होंने पूरे भारत और विदेशों जैसे उत्तर/दक्षिण अमेरिका, अफ्रीका आदि में विभिन्न लोककथाओं का प्रदर्शन किया है।

5. श्री गुरूङ्ग ने नेपाली लोकगीतों और लोक नृत्यों के साथ–साथ परंपरा और लोककथाओं (प्रथागत और लोककथाओं) जैसे मारुनी, सोरथी, संगिनी, रतौली, घसिया, रसिया, असरे, दमकी, बेठी, बालन, खाईचादी, डोलखे, कन्यादान, नवमती, धान नाच, शिलोक, कबीते, चुड़का, झौरे, गेन, देओसी–भैलो, भैलेनी, मालश्री, ठाड़ो भाका, तमांग सेलो, चंडी, घाटो, कौरा, गोथले गीत, तुंगना गीत, लोक डोहोरी आदि बहुत से विषयों पर शोध और अध्ययन में विशेषज्ञता हासिल की है। श्री गुरुंङ्ग ने कुछ किताबें लिखी है, जैसे ; लोक दर्पणभित्र भंज्यांग्का भाखारू 2017, लोकायन मा बनचाका नेपाली लोकगीत संगीत 2021, तिरसाना गीत–संगीत को – 2023।

6. श्री गुरूङ्ग को अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। उन्हें लोक गायक, संगीतकार और गीतकार के लिए सिक्किम राज्य पुरस्कार – 2008, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार 2004 – नई दिल्ली, सिक्किम सरकार द्वारा सिक्किम सेवा सम्मान – 2022, गारी बास – दार्जिलिंग द्वारा लोक साहित्यकार एम.एम. गुरुंग स्मृति पुरस्कार– 2022 प्रदान किया गया है।